

वार्तालाप नं.475, बंगलौर (कर्नाटक), दिनांक 30.12.07

Disc.CD No.475, dated 30.12.07 at Bangalore (Karnatak)

समय: 00.00 - 3.57

जिज्ञासु- बाबा, काली को तेल चढ़ाते हैं बोला ना। तो तेल माना ज्ञान की भाषा में?

बाबा- घृत में और तेल में क्या अंतर है घृत की कीमत में और तेल की कीमत में इतना क्यों अंतर रहा और है

जिज्ञासु- घृत माना समझा नहीं। घृत माना क्या?

बाबा- घृत माना घी प्योरिटी और तेल माना प्योरिटी या इम्प्योरिटी? तेल को प्योर बनाने के लिए रिफाईन करते हैं। रिफाईन करने के बावजूद भी उसकी कीमत घी की इतनी नहीं होती। क्यों? तेल तेल ही है और घी घी है घी सार से निकाला जाता है या दूध रूपी या दही रूपी विस्तार से निकलता है

जिज्ञासु- सार से।

Time: 00.00-03.57

Student: Baba, it is said that oil is poured over (the idol of) Kali. So, what does oil mean in knowledge?

Baba: What is the difference between *ghrit* (purified butter/*ghee*) and oil? Why has there been such a vast difference in the price of *ghrit* and oil?

Student: I did not understand what is meant by *ghrit*. What is meant by *ghrit*?

Baba: *Ghrit* means *ghee*, purity. And does oil mean purity or impurity? Oil is refined to make it pure. Despite refining it, it is not as costly as ghee. Why? After all, oil is oil. And ghee is ghee. Is ghee produced from the essence or from milk or curd that is the expanse?

Student: From the essence.

बाबा- पहले दूध और दही का सार निकाला जाता है फिर सार को भी गरम करके घी निकालते हैं। और तेल? तेल सार से निकलता है क्या? सीधा ही विस्तार से तेल निकल आता है तेल की प्योरिटी में और घी की प्योरिटी में जमीन-आसमान का अंतर है

जिज्ञासु- घृत भी चिपक जाता है ना बाबा?

बाबा- घृत में पानी का अंश होगा तो जरूर चिपकेगा। और अच्छी तरह से तपाया हुआ होगा तो घी चिपकता नहीं है मिक्सचरिटी होगी तो चिपकेगा और मिक्सचरिटी नहीं होगी तो नहीं चिपकेगा।

जिज्ञासु- घी में शक्ति मिलता है और तेल में शक्ति नहीं मिलता।

बाबा- मिलती है शक्ति; लेकिन एक होती है विकारी शक्ति और एक होती है बुद्धि को शुद्ध बनाने वाली शक्ति। घी में भी वेराईटी होती है भैंस का घी। भैंस बुद्धि में और गाय की बुद्धि में क्या अंतर होता है अंतर तो जरूर होता है जल्ला भोजन खायेंगे वस्त्री बुद्धि बनेगी। भेड़ का भी घी

होता है। भेड़-बकरी का दूध बुद्धि कसी बनाएगा? भेड़-बकरी जल्दी बुद्धि बनाएगा। जानवरों का माँस खाते हैं उनकी बुद्धि देखो और शाकाहारी भोजन खाते हैं उनकी बुद्धि देखो।

Baba: First the essence of milk and curd is extracted. Then that essence is heated to extract *ghee*. And oil? Does oil emerge from essence? Oil emerges directly from the expanse. There is a vast difference between the purity of oil and *ghee*.

Student: *Ghee* also sticks, doesn't it Baba?

Baba: If there is a trace of water in *ghee* it will certainly be sticky. And if the *ghee* has been heated properly, it does not stick. If there is contamination it will stick and if there is no contamination, it will not stick.

Student: We get energy through *ghee* and not through oil.

Baba: You do get energy (through oil), but one is a vicious energy, and one is an energy that makes the intellect pure. There is a variety in *ghee* too. *Ghee* prepared from the milk of buffalo. What is the difference between the intellect of a buffalo and the intellect of a cow? There is definitely a difference. As the food we eat, so shall our intellect become. There is a *ghee* prepared from the milk of sheep too. How will the milk of sheep and goats make the intellect? It will make the intellect like sheep and goats. Look at the intellect of those who eat the meat of animals and the intellect of those who eat vegetarian food!

समय: 4.00 - 14.08

जिज्ञासु- बाबा, देवतायें वाम मार्ग में चले गए ये किस समय का गायन है संगमयुग में कब?

बाबा- दुनियाँ की हर चीज चार अवस्थाओं से पसार होती है। कोई ऐसी चीज हो जो चार अवस्थाओं से पसार न होती हो तो बताएं। देवता हो, चाहे क्षत्रीय हो, चाहे वैश्य हो, या शूद्र वर्ण हो। चार अवस्थाओं से पसार होते हैं या नहीं? होते हैं। तो देवता वर्ण की आत्मायें भी जो 16 कला सम्पूर्ण देवता कहे जाते हैं वो भी चार अवस्थाओं से पसार होते होंगे। वो देवतायें कौनसे युग के हैं? असल में कौन से युग के हैं? सतयुग के। वो सतयुग के देवतायें भी चार अवस्थाओं से पसार होते हैं। और ऐसे नहीं कि चार युगों में ही चार अवस्थाओं से पसार होते हैं। संगम में भी और शूटिंग पीरियड में भी चार अवस्थाओं से पसार होते हैं। नहीं तो टक्की करके देख लो। बेसिक नालेज से टक्की करके देख लो। और जो एंवांस में आए हैं, जब से आए हैं लेकरके तबसे अब तक देख लो। अवस्था में अंतर आता रहा कि नहीं आता रहा? आता रहा।

Time: 04.00-14.08

Student: Baba, to which time does the saying 'deities started following the leftist path' pertain? At which time in the Confluence Age?

Baba: Everything in the world passes through four stages. Tell me if there is anything that does not pass through four stages? Whether it is deity, *kshatriya*, *vaishya* or *shudra* class. Do they pass through the four stages or not? They do. So, the souls belonging to the deity class, who are said to be deities perfect in 16 celestial degrees also must have passed through the four stages. Those deities belong to which Age? To which Age do they belong in reality? To the Golden Age. Those deities of the Golden Age also pass through four stages. And it is not as if they pass through the four stages only in the four Ages. Even in the Confluence Age, and even in the shooting period they pass through the four stages. Otherwise, just tally and see. Tally with the basic knowledge and see and those who have entered the path of advance

knowledge, ever since they have entered, they can see (themselves) since that time till now. Has the stage been changing or not? It has been.

भक्ति भी चार अवस्थाओं से पसार होती है। पहले भक्ति सतोप्रधान थी फिर भक्ति व्यवहारी तमोप्रधान बनती है। ज्ञान भी पहले सतोप्रधान। जब भट्ठी करने गए तो एक में कितनी श्रद्धा होती है। और बाद में उस श्रद्धा, विश्वास, भावना का बंटवारा होता रहता है। तो अवस्थायें नीचे आ जाती हैं। ज्ञान भी एक से सुनेंगे तो अव्यवहारी ज्ञान है। सतोप्रधान ज्ञान है। और अनेकों की बातें सुनकरके धारण किया, जीवन में अपनाया। तो ज्ञान भी तमोप्रधान बन जाता है। हाँ हर आत्मा की धारणा अपनी-2 अलग-2 है। सभी आत्मयें एक जस्सी तमोप्रधान नहीं बनती। और सभी आत्मयें टाईम टू टाईम एक जस्सी तमोप्रधान नहीं बनती। नहीं तो असल देवता वर्ण की जो पहला नंबर बीजरूप आत्मा है। देवता वर्ण का पहला बीज और इस्लाम धर्म का पहला बीज। अरे! सृष्टि का कोई तो पहला बीज होगा। होगा या नहीं होगा? होगा। ऐसे ही देवता धर्म का पहला आधारमूर्त माना जड़ रूप और इस्लाम धर्म का पहला आधारमूर्त अर्थात् जड़ के रूप में पार्ट बजाने वाला, जड़ों के रूप में। इन दोनों के बीच में अगर हम टक्की करें तो पहले कौन तमोप्रधान बनता है और लम्बे समय के बाद तमोप्रधान कौन बनता है।

जिज्ञासु- इस्लाम धर्म का।

Bhakti passes through four stages too. First *bhakti* was *satopradhan*¹; then *bhakti* becomes adulterous, *tamopradhan*². The knowledge was also initially *satopradhan*; when someone goes for *bhakti*, there is so much faith in the One. And later on, that faith, that devotion, that feeling is divided. So, the stage comes down. Even in case of knowledge, if you listen from One, the knowledge remains unadulterated, *satopradhan* knowledge. And if you listen to the words of many and inculcate it, if you adopt it in life, then knowledge also becomes *tamopradhan*. Yes, the way every soul assimilates is different. All the souls do not become *tamopradhan* equally. And all the souls do not become equally *tamopradhan* from time to time. Otherwise, the number one seed-form soul of the true deity class, the first seed of the deity class and the first seed of Islam religion..... Arey! There must be a first seed of the world. Will there be or not? There will be. Similarly, the first supporting soul (*aadhaarmoort*) of the deity religion, i.e. the root form and the first supporting soul of Islam religion, i.e. the one who plays a part in the form of root; if we tally the difference between both of them, then who becomes *tamopradhan* first and who becomes *tamopradhan* after a long time?

Student: The one who belongs to Islam religion [becomes *tamopradhan* first].

बाबा- हाँ। इस्लाम का जो आधारमूर्त जड़ है वो द्वापर के आदि से ही तमोप्रधान बन गई। और जो देवता धर्म की जड़ है आधारमूर्त है वो अंतिम जन्म में जाकरके सिर्फ दृष्टि मात्र से तामसी बनती है तो कितना वास्ट पिफरेन्स है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि सतोप्रधान सतोप्रधान ही रहेगा और तमोप्रधान तमोप्रधान ही रहेगा। देवता धर्म की बीजरूप आत्मा और देवता धर्म का अव्यल नम्बर जड़रूप आधारमूर्त आत्मा। ज्यादा काली और ज्यादा गोरी कौन पार्ट बजाएगी? बीजरूप

¹ Consisting of the quality dominated by goodness and purity

² Dominated by darkness or ignorance

आत्मा भल लम्बे समय तक सात्विक स्टेज में पार्ट बजाए तो भी अंतिम जन्म में सबसे जास्ती तामसी पार्ट बजाने वाली बन जाती है। तो साबित क्या हुआ? कि हर धर्म को चार अवस्थाओं से पसार होना पड़ता है। और हर आत्मा को चार अवस्थाओं से पसार होना पड़ता है। हर युग में ये क्रम चलता है। चाहे कोई भी युग में आने वाली आत्मा हो परमधाम से, वो चार अवस्थाओं से पसार जरूर होती है।

Baba: Yes. The supporting root of Islam became *tamopradhan* since the beginning of the Copper Age itself. And the root, the supporting soul of the deity religion becomes *tamopradhan* only through vision in the last birth. So, there is such a vast difference [between them]. But it will not be said that the *satopradhan* one will always remain *satopradhan* and the *tamopradhan* one will always remain *tamopradhan*. The seed-form soul of deity religion and the number one supporting root-like soul of the deity religion, who will play a darker part and who will play a fairer part? Although the seed-form soul plays a part in the *satvik* (pure) stage for a longer time, it becomes an actor who plays the most degraded part in the last birth. So, what does it prove? It proves that every religion has to pass through the four stages. And every soul has to pass through the four stages. This sequence goes on in every Age. It does not matter in which Age the soul comes down from the Supreme Abode, it certainly passes through the four stages.

जो आत्मायें अभी-2 भी उतर रहीं हैं ऊपर से वो पहले सतोप्रधान पार्ट बजाती हैं दुःख नहीं भोगती, सुखी आत्मा का पार्ट बजाती है। जो सुखी होता है वो दूसरों को भी क्या देता है सुख ही देता है। और जो दुःखी होता है खुद ही दुःखी है तो दूसरों को क्या बाँटेगा? दुःख ही बाँटेगा। चाहे संगमयुग हो, चाहे कोई भी युग हो। संगमयुग में शूटिंग होती है चार अवस्थाओं की। और युगों में असली ड्रामा होता है। उसे शूटिंग नहीं कहेंगे। शूटिंग कहो, रिहर्सल कहो, रिकार्डिंग कहो। ड्रामा में जो ड्रामाबाजी होती है नाटकबाजी होती है वो रियल होती है या नकली होती है जसो मुरली में बोला- बाप विदेशी बनकरके आए हुए हैं। तो रियलिटी में विदेशी हैं या वास्तव में विदेशी हैं या नाटकबाजी है।

जिज्ञासु- नाटकबाजी।

The souls that are descending from above in the present time play a *satopradhan* part initially. They do not suffer pain. They play the part of a happy soul. What does a happy soul give the others? He gives only happiness. And the one who is sorrowful; when he himself is sorrowful, what will he distribute to the others? He will distribute only sorrow. Whether it is the Confluence Age, or any Age. The shooting of four stages takes place in the Confluence Age. In other Ages, the actual drama takes place. It will not be called shooting. Call it shooting, call it rehearsal, call it recording. The dramatization that takes place in a drama is real or is it unreal? For example, it has been said in the Murlī: The Father has come in the form of a foreigner. So, is he a foreigner in reality or is He a foreigner actually or is it dramatization?

Student: Dramatics.

बाबा- बनकर आए हैं। इसका मतलब थे नहीं विदेशी। पार्ट बजाए रहे हैं विदेशी बनने का। क्यों? अगर विदेशी पार्ट न बजाए तो सब बच्चों से मिल भी नहीं सकते। और पहले से ही पक्का स्वदेशी का, मर्यादा पुरुषोत्तम का पार्ट बजायें। तो क्या होगा? सारी दुनियाँ में पहले ही प्रत्यक्षता हो जाएगी। बाप भी गुप्त, बच्चे भी गुप्त। उनका दान, मान, पद, पुरुषार्थ, सब गुप्त हो जाता है॥

Baba: He has come in the form of (a foreigner). It means that He was not a foreigner. He is playing a part of becoming a foreigner. Why? If he does not play the part of a foreigner, then He can't even meet all the children. And if He plays the part of a firm *swadeshi, maryada purushottam* (highest among all human beings in following the code of conduct) from the beginning, then what will happen? He will be revealed in the entire world in the beginning itself. The Father as well as the children are hidden. Their donation, respect, post, spiritual effort, everything is hidden.

समय- 14.16-14.50

जिज्ञासु- बाबा, संगमयुग का ड्रामा का रिकॉर्ड होता है। वो पहले 5000 वर्ष का एक्ट करता है॥ वो पहले है॥

बाबा- उसमें आगे पीछे नहीं कर सकते। ये कह सकते हैं कि जो आत्मा जब श्रीमत पर चलती है॥ तो उसका 21 जन्मों का काउन्ट होता है॥ रिकॉर्डिंग कहो या शूटिंग कहो। और मनमत या मनुष्यमत पर चलती है॥ तो 63 जन्मों का काउन्ट होता है॥

Time: 14.16-14.50

Student: Baba, the drama is recorded in the Confluence Age, isn't it? The 5000 years act takes place first. That takes place first.

Baba: We cannot say which one takes place first and which one takes place later on. We can say that when a soul follows *shrimat*, it accounts for the 21 births. Call it recording or shooting. And when it follows the opinion of its mind or the opinion of human beings, then it accounts for the 63 births.

समय-15.00-26.22

जिज्ञासु- बाबा, अष्टदेवों में चार आत्मायें स्थापनाकारी, चार पालनाकारी, चार विनाशकारी हैं ना।

बाबा- माना ऐसे नहीं कि कोई आत्मा में स्थापना के ही सद्ब्र संस्कार हैं, पालना के नहीं हैं, या विनाश के नहीं हैं। हर आत्मा में स्थापना, पालना और विनाश के संस्कार होते जरूर हैं। लेकिन कोई आत्मा में प्रधानता होती है॥ (जिज्ञासु ने कुछ कहा)

बाबा- हाँ। कोई स्थापना करने में प्रधान गुणों वाली है॥ कोई पालना करने में प्रधान गुणों वाली है॥ और कोई विनाश करने में प्रधान गुणों वाली है॥ तो?

जिज्ञासु- तो ये ही पूछना था विनाशकारी और पालनाकारी में फर्क क्या है॥ जो चार आत्मायें स्थापनाकारी होती हैं और चार आत्मायें विनाशकारी होती हैं ना।

Time: 15.00-26.22

Student: Baba, among the eight deities, four souls cause establishment, four (souls) give sustenance and four (souls) are destructive, aren't they?

Baba: It does not mean that a soul has the *sanskars* of establishment forever and not the *sanskars* of sustenance or destruction. Every soul certainly has *sanskars* of establishment, sustenance and destruction. But there is a domination (of a particular *sanskar*) in some souls. (The student said something)

Baba: Yes. There is domination of virtues of establishment in some, there is domination of the virtues of sustenance in some and there is domination of the qualities of destruction in some. So?

Student: So, I wanted to ask what is the difference between the souls that give sustenance and those who cause destruction? There are four souls that cause establishment and four souls that cause destruction, aren't there?

बाबा- ब्रह्मा को कहेंगे कसा पार्ट? स्थापना का पार्ट। माँ बच्चों के अवगुणों को देखने वाली होती ह। या नहीं होती ह। गुणों को ही देखती ह। अवगुणों को नहीं देखती। और बाप गुणों को भी देखता ह। तो अवगुणों को भी देखता ह। भारत की परंपरा में विष्णु देवता जो सदा बाप की सुरक्षा का पार्ट बजाने में स्त्री चोले का पार्ट बजाता रहा। लक्ष्मी रूप धारण करके क्या पार्ट बजाया? बाप की सुरक्षा की भस्मासुर से। मोहनी रूप धारण किया। वो विष्णु का पार्ट ह। ना। तो ऐसे नहीं ह। की उसमें पालना के ही संस्कार हैं। नहीं। संस्कार तो स्थापना के भी हैं, पालना के भी हैं और विनाश के भी कुछ न कुछ संस्कार हैं लेकिन बाप के सहयोगी के रूप में ह।

Baba: What kind of part will Brahma be said to have played? The part of establishment. Does a mother see the vices of children or not? She sees only the virtues; she does not see the vices. And the Father sees the virtues as well as the vices. In the Indian tradition, deity Vishnu always played the part of a woman to safeguard the Father. What part did he play by assuming the form of Lakshmi? He safeguarded the Father from Bhasmasur. He assumed an attractive form (Mohini). That is a part of Vishnu, isn't it? So, it is not that he has only the *sanskars* of sustenance. No. He has the *sanskars* of establishment as well as sustenance and there are also the *sanskars* of destruction to some extent or the other. But he is in the form of a helper of the Father.

जिज्ञासु- तो जो विनाशकारी होते हैं वो अगेन्स्ट में होते ह। क्या बाप के?

बाबा- सदा अगेन्स्ट नहीं हो सकता। ये हो सकता ह। कि आदि में कुछ न कुछ सहयोगी और बाद में विरोधी बन जाए। आदि में जो सहयोगी होगा तो आदि सो अंत में सहयोगी जरूर बनेगा। बाकी बीच में? बीच में कहेंगे लम्बे समय तक भी विनाशकारी हो सकता ह। तो ज्यादा कमाई कौनसी की - प्रिस्ट्रक्शन की या कनस्ट्रक्शन की? प्रिस्ट्रक्शन की कमाई ज्यादा की तो पद कहाँ मिलेगा? 21 जन्मों का पद तो मिलेगा लेकिन कहाँ मिलेगा? आदि में मिलेगा या अंत में मिलेगा? अंत में मिलेगा।

Student: So, are the destructive ones against the Father?

Baba: He cannot be against always. It is possible that he is cooperative to some extent or the other in the beginning and becomes an opponent later on. The one, who is cooperative in the

beginning, will certainly become cooperative in the end. And as regards the time in between.... It can be said about the time in between that he can be destructive for a long period. So, which income did he earn more? Income of destruction or of construction? He earned more income of destruction; so where will he achieve a post? He will definitely achieve a post in the 21 births, but where will he get it? In the beginning or in the end? He will get it in the end.

जिज्ञासु- बाबा, अष्टदेवों में पहले चार स्थापना करने वाली ह॥ और चार को बोला वो पालना करने वाली ह॥ और चार ह॥ उसका काम क्या?

बाबा- उनका काम आदि में थोड़ा सहयोगी बनना और अंत में थोड़ा सहयोगी बनना। आदि में भी लेने वाले फर्स्ट और अंत में भी लेने वाले फर्स्ट और बीच में लम्बे समय तक विनाशकारी।

Student: Baba, among the eight deities, the first four bring about establishment. And as regards [the next] four, it has been said that they do sustenance. What is the task of the remaining four?

Baba: Their task is to become helpful to some extent in the beginning and to some extent in the end. They are the first ones to obtain (the inheritance) in the beginning as well in the end and in between they are destructive for a long time.

जिज्ञासु- अंत में लेने वाले माना क्या लेना?

बाबा- वर्सा ही लिया जाता ह॥ बाप से क्या लिया जाता ह॥ जो भी ए॥ वांस के आदि में थे सहयोगी विशेष - वो कौनसे धर्म की विशेष आत्मायें थीं जिन्होंने बाप को प्रत्यक्ष किया? इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन। लेकिन उसी समय, जिस समय उन्होंने सहयोग दिया, उसी समय उन्होंने ग्लानि भी कर ाली। साँप क्या करता ह॥ साँप के जन्म देने की पद्धति क्या होती ह॥ बच्चों को?

जिज्ञासु- अंडे होते हैं।

बाबा- नहीं। अंडे की बात वो अलग। जन्म देने की पद्धति। साँप अपने अंडे देता ह॥ और अपने अंडों को खा भी जाता ह॥ जो कुं॥ ली के बाहर निकल गए तो निकल गए तो निकल गए। और जो भी अंदर अं॥ी बच्चे हैं उन सबको खा जाता ह॥ अपना पक्का फॉलोवर बना लेगा। साँप किस बात की यादगार ह॥ पाँच विकारों की यादगार ह॥ तो ये भी यज्ञ के आदि में थे। सहयोग करने में भी आगे थे। ड्रामा ऐसा बना हुआ ह॥ कि बाप को कौनसे बच्चे प्रत्यक्ष करते हैं?

जिज्ञासु- विदेशी।

Student: 'Those who obtain in the end' meaning what do they obtain?

Baba: It is the inheritance that is obtained. What else is obtained from the Father? All those who were especially helpful in the beginning of the advance (party), the special souls who revealed the Father, to which religion did they belong? Islam, Buddhism and Christianity. But at the same time when they extended help, they also defamed (the Father). What does a snake do? By which method does a snake give birth?

Student: It lays eggs.

Baba: No. The topic of eggs is different. (What is) the method of giving birth? A snake lays its eggs and also eats them up. The eggs which are able to come out of its grip become free. But it eats all those offspring which remain under its grip. He will make them his firm followers. What

does a snake represent? It is a memorial of the five vices. So, even these souls were present in the beginning of the yagya. They were ahead in giving help too. The drama has been made in such a way that, which children reveal the Father?

Student: The foreigners (*videshi*).

बाबा- स्वदेशी तो पहचान ही नहीं पाते। क्योंकि कुम्भकरण की निद्रा में सोए हुए होते हैं। कौन पहचानते हैं? विदेशी बच्चे ही बाप को पहले पहचानते हैं क्योंकि बुद्धिवादिता में आगे होते हैं। बुद्धि में तीखे होते हैं। श्रद्धा, विश्वास और भावना भारतवासियों में ज्यादा होती है या विदेशियों में ज्यादा होती है? भारतवासियों में श्रद्धा, विश्वास और भावना ज्यादा होती है इसीलिए भारतमाता कहा जाता है। माताओं में श्रद्धा, विश्वास, भावना ज्यादा होती है या बुद्धिवाद ज्यादा होता है? माताओं में ज्यादा होती है तो वो भगवान के रूप को नहीं पहचान पाते। और विदेशी बुद्धि के तीखे होने के कारण जल्दी पहचान लेते हैं। एक है दिलवाले और एक हैं दिमागवाले। बाप को ज्यादा कौन प्रिय है?

जिज्ञासु- दिलवाले।

Baba: The *swadeshis* are unable to recognize at all because they remain fast asleep like Kumbhakarna (the demon king who used to sleep for 6 months). Who recognize (the Father)? Only the *videshi* (foreigner) children recognize the Father first because they are superior in intelligence. They have a sharp intellect. Do the Indians have more devotion, faith and feelings or do the foreigners have more devotion, faith and feelings? Indians have more devotion, faith and feelings; this is why it is said 'Mother India' (*Bhaarat Mata*). Do the mothers have more devotion, faith and feelings or do they have more intelligence? Mothers have more (faith). So, they are unable to recognize the form of God. And because of having a sharp intellect the foreigners recognize easily. One kind is those with a heart (*dilwaaley*) and one is those having brains (*dimaagvaaley*). Who are dearer to the Father?

बाबा- दिलवाले बच्चे ज्यादा प्रिय हैं। क्यों? अरे! बाप तो खुद ही बुद्धिमानों की बुद्धि है उसको कोई क्या बुद्धि देगा। जो बुद्धिमानों की बुद्धि बाप है और उसको कोई अपनी बुद्धि की प्रखरता दिखाए तो बाप उसको पसंद नहीं करता। बाप के पास जो चीज नहीं है क्या? दिल नीचे या दिमाग ऊपर? दिमाग ऊपर होता है दिल नीचे होता है। सुप्रीम सोल बाप है बुद्धिमानों की बुद्धि आत्मा। वो बाप है आत्माओं का बाप। और जो भी आत्मार्य हैं वो सब उस बाप के मुकाबले सब सीतार्य हैं। क्या? तुम सब सीतार्य हो। चाहे पुरुष का चोला है चाहे स्त्री का चोला है। तुम सब क्या हो? तुम सब सीतार्य हो, तुम सब भक्तियार्य हो। राम बाप है एक। और वो राम बाप भी एक कब है? 84 जन्म में राम बाप है या सिर्फ संगमयुग में राम वाली आत्मा अपने स्वरूप को पहचानती है? संगमयुग में भी तब पहचानती है जब उसमें सुप्रीम सोल बाप प्रवेश करता है तो बाप बुद्धिमानों की बुद्धि है जो भी धर्मपितार्य हैं उनको बुद्धु कहेंगे या बुद्धिमान कहेंगे? क्या कहेंगे? बुद्धु कहेंगे? अगर बुद्धु थे तो भारतवासी जीत जाने चाहिए या हार जाने चाहिए? भारतवासी जीत गए विदेशियों के मुकाबले या हार गए? सबकुछ गंवाए दिया या विदेशियों से जीत लिया? हार गए। तो बुद्धु हैं.....।

Baba: The children with a heart are dearer. Why? Arey! The Father is Himself the most intelligent one among the intelligent ones (*buddhimaanon kee buddhi*). Who can give Him intelligence? If someone shows his intelligence to the Father, who is the most intelligent one, then the Father does not like him. Something that the Father lacks. What? Is the heart below or is the brain above? Brain is above and the heart is below. The Supreme Soul Father is a soul who is the most intelligent one. That Father is the Father of souls. When compared to that Father, all the other souls are Sitas. What? You all are Sitas; whether it is a male body or a female body. What are all of you? You all are Sitas. You all are devotees (*bhaktiyaan*). The Father Ram is one. And when is that Father Ram present? Is he Father Ram in 84 births or does the soul of Ram recognize his form only in the Confluence Age? Even in the Confluence Age he recognizes (his form) only when the Supreme Soul Father enters him. So, the Father is the most intelligent one. Will all the religious fathers be called fools or intelligent ones? What will they be called? Will they be called fools? If they were fools, should the Indians have won or should they have lost? Did the Indians win or lose against the foreigners? Did they lose everything or did they gain victory over the foreigners? They lost. So, they are fools....

जिज्ञासु- बाप के मुकाबले बुद्ध हैं।

बाबा- अच्छा! 63 जन्मों में भारतवासियों के मुकाबले विदेशी क्या हुए?

जिज्ञासु- वो तो बुद्धिमान हुए।

बाबा- वो तो बुद्ध हैं। हाँ जी। बाप को भोलेनाथ कहा जाता है। कि बुद्धिमानों की आकरके सुरक्षा करता है जो भोली बुद्धि वाले हैं, देवताई बुद्धि वाले हैं, साफ दिल हैं, उनको पसंद करता है और जो दुनियाँ स्थापन करता है वो दुनियाँ साफ दिल वालों की दुनियाँ बनती है या जिनके दिल में कचड़ा भरा रहता है उनकी दुनियाँ बनती है जो साफ दिल होकरके बाप को सच्चा पोतामेल देते हैं उनकी दुनियाँ बनती है।

Student: When compared to the Father they are fools.

Baba: OK! In the 63 births, when compared to the Indians how were the foreigners?

Student: They were intelligent.

Baba: They (i.e. the Indians) are fools. Yes. The Father is called the Lord of the innocent ones. Or does He come and protect the intelligent ones? He likes the ones with innocent intellect, the ones with divine intellect, clean intellect. And the world that He establishes consists of those with a pure heart or of those whose hearts are full of garbage? The (new) world consists of those who give true *potamail* to the Father with a pure heart.

समय-26.54-29.32

जिज्ञासु- बाबा, द्वापर में जो अर्ध विनाश होता है और कलियुग के अंत में पूरा विनाश होता है ये दोनों में फर्क क्या है?

बाबा- द्वापर के आदि में जो अर्ध विनाश होता है वो 8 कलाओं का ही विनाश होता है या 16 कला सम्पूर्ण विनाश होता है 8 कलाओं का ही विनाश होता है। विनाश तो होता है लेकिन कितनी कला वाला? 8 कला वाला अधूरा विनाश होता है 8 फिर भी बच गए। और कलियुग के अंत में? विनाश भी 16 कला टोटल विनाश पूरी ताकत में कुछ भी बचता नहीं। चाहे जड़ अणु-

अणु हो, चाहे पेड़-पौधों की आत्मा हो, चाहे जड़ जंगम आत्मायें हो, पशु-पक्षी की आत्मायें हो, कीड़े-मकोड़ों की आत्मायें हो। सब आत्मायें जहाँ से उतरी हैं अपना सारा साईकल पूरा करके कहाँ पहुँचेंगे? वही पहुँचेंगे। उसको कहेंगे सम्पूर्ण विनाश।

Time: 26.54-29.32

Student: Baba, what is the difference between the semi-destruction that takes place in the Copper Age and the complete destruction that takes place at the end of the Iron Age?

Baba: Is the semi-destruction that takes place in the beginning of the Copper Age destruction of just 8 celestial degrees or of complete 16 celestial degrees? Destruction of only 8 celestial degrees takes place. Destruction does take place, but of how many degrees? It is an incomplete destruction of the 8 celestial degrees. 8 still remain. And at the end of the Iron Age? Destruction of complete 16 celestial degrees, the total destruction, nothing remains in the total power (of the soul). Whether it is non-living atoms, whether it is the soul of trees and plants, whether it is the non-living or the living souls, whether it is the souls of animals and birds, whether it is the souls of worms and insects, where will all the souls reach after completing their cycle? They will reach the same place from where they descended. That will be called complete destruction.

चक्र होता ह॑ना। ये चक्र ह॑तो चक्र यहाँ से शुरू हुआ तो यहाँ तक क्या कहेंगे? गिरती कला ही कहेंगे। यहाँ से शुरू हुआ और यहाँ तक क्या कहेंगे? गिरती कला ही। दाईं ओर का चक्र ह॑फिर यहाँ से यहाँ तक क्या कहेंगे? बाईं ओर का चक्र। अधूरा चक्र कहाँ पूरा हुआ? आधा चक्र हुआ एक तरफ और आधा चक्र हुआ दूसरी तरफ। और दोनों मिलाके सम्पूर्ण चक्र हो गया। तो पूरा चक्र चाहिए। चारों अवस्थाओं से पसार होना चाहिए। और हर आत्मा को चार अवस्थाओं से पसार होना चाहिए। हर वस्तु को चार अवस्थाओं से पसार होना चाहिए। पांच तत्वों के अणु-अणु को चार अवस्थाओं से पसार होना चाहिए। तब कहेंगे सम्पूर्ण विनाश।

There is a cycle, isn't there? This is a cycle, so the cycle started here (Baba showed through gestures); so what will be said upto here? It will be called decreasing celestial degrees only. It started from here and what will it be called till here? It will be called decreasing celestial degrees. The cycle is on the right side; and then what will be said from this place to this place? The left side of the cycle. Where did the incomplete cycle become complete? On the one side is half of the cycle and on the other side is another half cycle. And both together constitute the complete cycle. So, a complete cycle is required. We should pass through all the four stages. And every soul should pass through four stages. Everything has to pass through the four stages. Every atom of the five elements should pass through four stages. Then it will be called complete destruction.

समय-29.37-33.53

जिज्ञासु- बाबा, दिल में कुछ चिंतन-मंथन चलता नहीं ह॑ तो क॑से दिलवाला, दिमागवाला का फ॑र्क होता ह॑बाबा?

बाबा- मंथन चिंतन दिल में चलता ह॑या दिमाग में चलता ह॑ जिसके दिमाग में मनन-चिंतन-मंथन ईश्वरीय सरणी के अनुसार चलता ह॑वो दिलवाला बाप का बच्चा ह॑या दिमाग वालों का

बच्चा ह॥ दिलवाला बाप का बच्चा ह॥ और जिसकी बुद्धि में श्रीमत के अनुकूल मनन-चिंतन-मंथन नहीं चलता। मनमत के आधार पर चलता ह॥ या मनुष्यों की मत के आधार पर चलता ह॥ वो बुद्धिमानों का बच्चा ह॥ अनेक बुद्धिमानों का बच्चा ह॥ या एक जो बुद्धिमानों की बुद्धि ह॥ उसका बच्चा ह॥

जिज्ञासु- अनेक बुद्धिमानों का।

Time: 29.37-33.53

Student: Baba, thinking and churning does not take place in my heart. So, Baba, what difference is there between a person with dominance of heart (*dilvala*) and someone with dominance of intellect (*dimaagvala*)?

Baba: Does churning and thinking take place in the heart (*dil*) or in the intellect (*dimaag*)? The one in whose intellect thinking and churning takes place in the way which God wants; is he a child of the *Dilvala*³ Father or is he a child of those who have brains? He is the child of the *Dilvala* Father. And the one in whose intellect thinking and churning does not take place according to *shrimat*, and if it takes place on the basis of the opinion of the mind (*manmat*) or on the basis of the opinion of the human beings (*manushyamat*), he is the child of the intelligent ones. Is he a child of numerous intelligent ones or of the most intelligent one?

Student: (He is a child) of numerous intelligent ones.

बाबा- तो ये अंतर पड़ जाता ह॥ अभी इतना ज्ञान मिल रहा ह॥ और इतना ज्ञान मिलने के बावजूद भी जिसका मनन-चिंतन-मंथन ज्ञान के अनुसार चलता ही नहीं। अगर चलती भी ह॥ बुद्धि। तो दुनियाँ जिस तरह धंधे-धोरी में बुद्धि चला रही ह॥ वक्सी ही चलती ह॥ जो ब्राह्मणों का धंधा ह॥ उस धंधे में बुद्धि नहीं चल रही ह॥ तो क्या कहेंगे कि पुरुषार्थी जीवन में वो बुद्धिमानों की बुद्धि एक बाप से प्रभावित होकर रहा या अनेकों से प्रभावित होकर रहा? अनेकों से प्रभावित हो गया इसीलिए दुनियाँवी तरीके से बुद्धि चल रही ह॥

Baba: So, this is the difference. Now so much knowledge is being received and despite receiving so much knowledge, the one whose thinking and churning does not take place according to knowledge at all; even if the intellect works, it thinks about the business and occupation like the people of the world, the intellect is not working towards the occupation of the Brahmins. So, will it be said that he remained influenced in his *purusharthi*⁴ life by one Father the most intelligent one or by many? He was influenced by many. This is why the intellect is working in a worldly way.

अगर बाप से प्रभावित हुई होती ह॥ बुद्धि। और जन्म-जन्मांतर एक बाप की प्रजा बनकरके रहने वाली जो आत्मा होगी उसकी बुद्धि दुनियाँवी तरीके से चलेगी या एक बाप ज॥ चलाना चाहता ह॥ व॥ चलेगी? कहाँ तीखी होगी? एक बाप जिस सरणी में बुद्धि को चलाना चाहता ह॥ मन-बुद्धि को घुमाना चाहता ह॥ वहाँ बुद्धि घूमेगी। उसका कारण क्या होता ह॥ कारण यही होता ह॥ कि औरों से प्रभावित होने वाली आत्मा बाप के जो मुख्य ायरेक्शन्स हैं उनको शुरुआत से ही

³ The one who takes everyone's heart

⁴ The life in which we make spiritual efforts

फॉलो नहीं करती। ज्ञान में आने के बाद मुख्य ायरेक्शन बाप का क्या मिलता है पवित्र बनो, योगी बनो। लेकिन बाप की पहचान नहीं है तो पवित्र रहेगा ही नहीं। ज्ञान काल में फाउंडेशन से ही अपवित्रता का फाउंडेशन लगाएगी तो बुद्धि कभी बन जाएगी? दुनियाँवी बुद्धि बनेगी या ईश्वरीय बुद्धि बनेगी? दुनियाँवी बुद्धि बन जाती है। मनन-चिंतन-मंथन ज्ञानयुक्त होकर चल ही नहीं सकता।

If the intellect is influenced by the Father, and if the soul has been the subject of one Father for many births, will its intellect work in a worldly way or in the way one Father wants it to work? Where will it be sharp? The intellect will move in the way in which one Father wants it to move, or wherever He wishes the mind and intellect to move. What is the reason for it? The reason for this is that the soul which becomes influenced by others, does not follow the main directions of the Father from the beginning itself. After entering the path of knowledge, what is the main direction of the Father? Become pure, become yogi. But if there is no realization of the Father, then he will not lead a pure life at all. If he lays the foundation of impurity from the foundation period of knowledge itself, then what will the intellect become like? Will it become a worldly intellect or a divine intellect? It becomes a worldly intellect. The thinking and churning cannot take place in accordance with the knowledge at all.

समय- 34.40-45.45

जिज्ञासु- संगमयुग में आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान हो जाता है शूटिंग पीरियड में.....।

बाबा- सतोप्रधान से तामसी बन जाती है जो बाप के ायरेक्शन्स हैं उनकी अवज्ञा करते-2। क्योंकि लौकिक दुनियाँ में जो पाप करते थे उसका एक गुणा पाप बनता था और यहाँ ब्राह्मण बनने के बाद जो पाप करते हैं उसका सौ गुणा पाप तुरंत चढ़ जाता है। तो जिसके ऊपर सौ गुणा पाप का बोझा चढ़ जाएगा और कहीं खुदा न खास्ता जो पाप किया है उसको छुपा लेता है। तो पाप के ऊपर भी पाप बढ़ता जाता है। दिन दुगुना रात चौगुना होता जाता है। तो आत्मा तामसी बनेगी या सात्विक बनेगी? और ही तामसी बनती जाती है। पता भी नहीं चलता कि माया रावण सवार हो गया।

Time: 34.40-45.45

Student: In the Confluence Age, the soul changes from *satopradhan*⁵ to *tamopradhan*⁶ in the shooting period.....

Baba: It changes from *satopradhan* to *tamopradhan* while disobeying the directions of the Father because whatever sins we used to commit in the *lokik* world, we used to accumulate one time sin and here, after becoming a Brahmin, we accumulate hundred times sins for the sin that we commit. So, the one who accumulates hundred times sins and if by chance he hides the sins he has committed, the sins keep increasing. It keeps increasing day in and day out. So, will the soul become degraded or pure? It goes on becoming degraded. He does not even know that maya Ravan has entered him.

⁵ Consisting mainly in the quality of goodness and purity

⁶ Dominated by darkness or ignorance

जिज्ञासु- नहीं बाबा, वो भाई का प्रश्न है वो तमोप्रधान बन जाता है फिर अचानक लास्ट में सतोप्रधान कसा बनता है

बाबा- अरे! यहाँ प्रभ्रिटस तो बताई हुई है बाप को याद करने की। प्रभ्रिटस में कमी पड़ती है या प्रभ्रिटस बढ़ती जाती है याद की जो प्रभ्रिटस है अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने की प्रभ्रिटस है वो बढ़ रही है लगातार या घट रही है बढ़ रही है भले पाप कर्म भी बढ़ते चले जा रहे हैं; लेकिन प्रभ्रिटस भी बढ़ती चली जा रही है तो अंत में उसका वारा न्यारा हो जाता है। अंत में जिसकी प्रभ्रिटस ज्यादा होगी वो फट से अपने पाप कर्मों को भस्म कर लेगा। वो प्रभ्रिटस है साकार में निराकार को याद करने की। क्या? याद करने की। जो साकार में निराकार को याद करने के आदी हो जाते हैं, प्रभ्रिटस हो जाते हैं, उनके मुकाबले जो सिर्फ निराकार बिंदु को याद करने के प्रभ्रिटस हो जाते हैं। उन दोनों के बीच में निरंतर याद की प्रभ्रिटस किसकी होती है और सहज याद करने की प्रभ्रिटस किसकी होगी? जो साकार में निराकार को याद करता है उसकी याद निरंतर हो जाती है और सहज भी हो जाती है

Student: No Baba, that brother is asking that when a soul becomes *tamopradhan*, then how does it become *satopradhan* suddenly in the last?

Baba: Arey! Here you have been taught the *practice* to remember the Father. Does the *practice* decrease or increase? Is the *practice* of remembrance, the *practice* of considering itself to be a soul and remembering the Father increasing or decreasing continuously? It is increasing. Although the sinful actions are also increasing, the practice is also increasing. So, in the end he succeeds. In the end, the one who has *practiced* more will burn his sinful actions immediately. That *practice* is of remembering the incorporeal one within the corporeal one. What? To remember. When we compare between those who become habituated, those who become *practiced* to remember the incorporeal one within the corporeal one and those who become practiced to remember only the incorporeal point; who practices remembering continuously and who practices easy remembrance? The one who remembers the incorporeal one within the corporeal one remembers continuously and easily.

सिर्फ बिंदु को जो याद करते हैं कोई साकार को नहीं मानते। “हम नहीं मानते”। तो देह अहंकार के कारण ऐसा होता है या निरअहंकारी के कारण ऐसा होता है जरूर उनमें भयंकर देहभान भरा हुआ है ज्ञान की सारी बातों को भी मानते हैं। फिर उस साकार को ठुकराते हैं। ग्लानि करते हैं। जससे दुर्योधन बुद्ध था क्या? बुद्ध तो नहीं था। और युधिष्ठिर? वो भी बुद्ध नहीं था। लेकिन अहंकार की दृष्टि से देखा जाए। तो अहंकारी ज्यादा कौन था और निरअहंकारी कौन था? युधिष्ठिर निरअहंकारी था और दुर्योधन अहंकारी था। अंदर से समझता था कि जो भी गुरु द्रोणाचार्य हैं और जो भी भीष्म पितामह वगैरह हैं, वो उनको विशेष मान देते हैं। मेरे अंदर भी पढ़ाई की कोई कमी नहीं है दुर्योधन समझता था। लेकिन अहंकार की वजह से नीचा गया।

Those who remember just the point and do not accept the corporeal one, (those who say) ‘we don’t accept’. So, does it take place due to body consciousness or due to being egoless? Certainly they are full of body consciousness. They accept all the issues of knowledge as well. Then they despise that corporeal one. They defame him. For example, was Duryodhan³ a fool? He was not a fool. And what about Yudhishtir³? He was not a fool either. But if you see from

the point of view of ego, who was more egotistic and who was egoless? Yudhishtir was egoless and Duryodhan was egotistic. He realized from within that Guru Dronacharya, Bheeshma Pitamah⁷ etc. give him (i.e. Yudhishtir) special respect. Duryodhan used to realize that he too does not lack knowledge, but he met downfall due to ego.

ये देहअभिमान नीचे ले जाता है। देहअभिमान निराकार बाप को पहचानने नहीं देता इसीलिए जो एवांस में आ जाते हैं वो एवांस में भी भल नौ प्रकार के बीज हैं परंतु फिर भी नंबरवार साकार में निराकार को पहचानने वाले हैं। और जड़ों पर जो बठे हुए हैं वो जड़ों तक ही सीमित रहते हैं बीज की स्टेज प्राप्त ही नहीं कर पाते। इसीलिए नर से नारायण की स्टेज भी नहीं प्राप्त कर सकते। उनके 63 जन्मों के पाप अंत में जाकरके सब खलास हो जाते हैं। भल बीच-बीच में उन्होंने पाप बहुत तेजी से किए। जल्ले बताया है भक्ति मार्ग में, काशी करवट खाते थे। तो क्या अंतर पड़ जाता था? उनके पिछले जन्म के सारे पाप भस्म हो जाते थे। और फिर अगला जन्म लेकर जितने पाप भस्म किए हैं उस अगले जन्म में उतने से भी ज्यादा पाप बढ़ जाते हैं। तो भी अंतिम जन्म में जाके रिजल्ट क्या निकलता है उनका? उनमें कौनसी ऐसी शिफ्त आ जाती है जो आखरी जन्म में हाई जम्प लगा जाते हैं? जल्ले 8-9 विशेष आत्माओं के लिए अव्यक्त वाणी में बोला है कि 100 मणके जो हैं वो तो फिर भी एकरस चलते हैं। और जो 8-9 हैं वो बहुत ऊपर नीचे होते हैं। अभी अभी ऊपर, अभी अभी नीचे। अभी अभी अप और अभी अभी डाउन। तो हाईजम्प लगाने की प्रक्रिया ज्यादा किसकी हुई? 8 की होगी या 100 की होगी? 8 की हाई जम्प लगाने की प्रक्रिया ज्यादा हो जाती है।

This body consciousness brings him down. Body consciousness does not allow him to recognize the incorporeal Father; this is why those who come to advance (party); although there are nine kinds of seeds in advance (party) also, they recognize the incorporeal one within the corporeal one numberwise. And those who are sitting on the roots remain limited to the roots (in their stage); they are unable to achieve the stage of the seeds. This is why they can't achieve the stage of 'a man to Narayan' either. The sins of their 63 births are finished in the end although they committed sins very quickly in between. For example, it has been said in the path of bhakti that people used to undertake *Kashi Karvat* (a tradition in ancient India where devotees of Shiva used to sacrifice their lives by falling into a deep well containing a big sword at its base to get rid of their sins). So, what difference did it used to make? All the sins of their past birth used to be burnt. And after taking the next birth, they used to commit even more sins than the sins they burnt (in the previous birth). Even so, what is the result they get in the last birth? Which quality do they acquire so that they make a *high jump* in the last birth? For example, about the 8-9 special souls, it has been said in the *Avyakta Vani* that the 100 beads tread uniformly (on the path of knowledge). And the 8-9 oscillate up and down a lot. Just now (they are) up and just now (they are) down. Just now up and just now down. So, who might have *practiced* making a *high jump* more, is it the 8 or the 100? 8 *practice* making a high jump more.

⁷ The elderly characters in the epic Mahabharata, Duryodhan = the villainous character; Yudhishtir = the virtuous one.

तो समझ में आया कि शूटिंग पीरियड में चार अवस्थाओं से पसार होने के बावजूद भी, अति तामसी बन जाने के बावजूद भी, कलाहीन आत्मा बन जाने के बावजूद भी, ऊँचे कक्षे उठ जाते हैं? एक सेकेण्ड में ब्रह्मा पतित सो क्या बन जाते हैं? विष्णु पावन बन जाते हैं। जब ब्रह्मा बन सकता है ब्रह्मा पतित, विकारी से पावन विष्णु एक सेकेण्ड में। तो ब्राह्मण नहीं बनेंगे? ब्राह्मण भी बन सकते हैं। बाकी सब नहीं बन सकते। क्या? जिन्होंने राजयोग की प्रक्टिस की होगी...। योग का नाम बहुत बाला हाना। ऐसी पढ़ाई और किसी मनुष्य मात्र ने पढ़ाई? नहीं। ये राजयोग की पढ़ाई बाप ही आकरके पढ़ाते हैं।

So, did you understand , despite passing through four stages in the shooting period, despite becoming most degraded, despite becoming devoid of celestial degrees, how they rise? Within a second what does Brahma transform from a sinful one into? He becomes a pure Vishnu. When Brahma can become (pure), when Brahma is transformed from a sinful, vicious one to Vishnu in a second, will the Brahmins not become [deity]? Brahmins can become (deities) too. The rest cannot become (deities). What? Those who have *practiced rajyog*.....Yog is very famous, isn't it? Did any other human being teach such knowledge? No. Only the Father comes and teaches the knowledge of this *rajyog*.

तो जिन्होंने ये पढ़ाई पढ़ी दत्त-चित्त होकर। रेग्युलर स्टूडेंट बनते हुए और पंच्युअल स्टूडेंट होते हुए। उनके लिए बोला कि जो सुप्रीम सोल बाप टीचर बनकरके आता है। ऐसे बाप सुप्रीम सोल टीचर की जो इज्जत करते हैं। उसकी पढ़ाई की इज्जत करते हैं। बाप उनके ऊपर मेहरबान होता है। और जो क्लास में पंच्युअल ही नहीं हैं। क्लास शुरू हो गया आधा घंटे के बाद आए, एक घंटे के बाद आए। तो पंच्युअल कहेंगे, रिगार्ड करने वाला कहेंगे टीचर की पढ़ाई को, या प्रिसरिगार्ड करने वाला कहेंगे? प्रिसरिगार्ड करने वाले हो गए। ऐसे ही कभी बाप के क्लास में आए और कभी नहीं आए।

So, for those who studied this knowledge with concentration, like a regular student, and like a punctual student, it has been said that those who respect the Supreme Soul Father who comes as a teacher, those who respect his teachings, the Father is pleased with them. And those who are not punctual in the class at all. If they come to the class half an hour, one hour after the class started, then will they be called punctual, will they be said to be the ones who give regard to the teacher's teaching or will they be said to be the ones who disregard? They are the ones who disregard. Similarly, sometimes they come to the Father's class and sometimes they do not.

वहाँ जो स्कूल होते हैं दुनियाँ में वहाँ तो फाईन पड़ जाता है। रोज न आने वाले कभी एबसेन्ट करते हैं तो क्या हो जाता है फाईन पड़ जाता है। यहाँ बाहर से देखने में तो कोई फाईन नहीं है। पता ही नहीं लगता कि हमारे ऊपर कोई फाईन चढ़ गया। प्रिसरिगार्ड का। सुप्रीम टीचर की प्रिसरिगार्ड करने का भी कोई फाईन पड़ता है। लेकिन वास्तव में इसका भी सौ गुणा पाप चढ़ता है। तो आखरीन जो रिजल्ट आता है उस रिजल्ट में जो रेग्युलर बच्चे हैं और पंच्युअल बच्चे हैं वो आगे निकल जाते हैं। दूसरे पीछे रह जाते हैं।

In those schools in the world, fine is imposed (on latecomers). What happens to those who do not come daily, those who remain absent sometimes? Fine is imposed on them. Here, no fine is imposed as such. We do not know at all that we have been imposed a fine for disregard (shown to the teacher), (we don't know at all) that a fine is imposed for showing disregard to the Supreme Teacher, but actually, it also accumulates hundred times sins. So, ultimately, in the result that comes out, the regular children, the punctual children go ahead. Others lag behind.

समय- 45.46 -52.40

जिज्ञासु- बाबा, शिव का फॉलोवर्स बनता ह॥ शिव, विष्णु का फॉलोवर्स बनते हैं व॥ व॥ फिर भी व॥ व॥ व॥ का बहुत महिमा ह॥ बाबा, शिव के?

बाबा- जो विष्णु के फॉलोवर बनते हैं वो किसके फॉलोवर हैं वास्तव में? ऐसे के फॉलोवर हैं जो 84 जन्मों में विषय वासना का जीवन बिताता ही नहीं। दुनियाँ में एक आत्मा ऐसी ह॥ जो अव्यभिचारी जीवन जन्म-जन्मांतर का बिताती ह॥ अरे! वेरायटी झाड़ ह॥ तो वेरायटी झाड़ में कोई ऐसी भी आत्मा होनी चाहिए या नहीं? होनी चाहिए। और उसको जो फॉलो करने वाले हैं उनमें भी वो ही विशेषता होती ह॥ क्या? जनम-जन्मांतर विषय वासना में, व्यभिचार में जाने वाले ही नहीं। इससे साबित होता ह॥ कि वो पावरफुल आत्मा ह॥ या कमजोर आत्मा ह॥

जिज्ञासु- पावरफुल।

Time: 45.46-52.40

Student: Baba, the followers of Shiv become *Shaiv*, the followers of Vishnu become *Vaishnav*. However, Baba, the Vaishnavites are praised more than the Shaivites.....?

Baba: Those who become the followers of Vishnu are whose followers in real sense? They are followers of such a person who does not lead a life of vices and lust at all in 84 births. There is one such soul in the world who leads an unadulterated life in every birth. Arey, it is a variety tree; so in the variety tree there should also be one such soul or not? There should be. And those who follow it also have that specialty. What? They do not indulge in lust and adultery for many births, too. It proves that... are they powerful souls or weak souls?

Student: Powerful.

बाबा- हं? जन्म—जन्मांतर की जो रानियाँ हैं वो आधीन रहने की स्वभाव वाले हैं या स्वतंत्र रहने के स्वभाव वाली हैं? आधीन रहने की स्वभाव वाली हैं। बाप आकरके क्या बनाता ह॥ बाप आकरके स्वाधीन बनाता ह॥ हम आत्माओं को। उनको कहा जाता ह॥ रूद्रमाला के मणके। वो ह॥ बाप की माला। वो स्वाधीन स्वभाव के हैं। और जो व॥ व॥ के फॉलोवर हैं, विष्णु के पंथी हैं वो आधीन रहने के स्वभाव वाले हैं। ज्यादा अपने जीवन में सुख राजायें भोगते हैं, चाहे स्वर्ग में और चाहे नर्क में, या रानियाँ ज्यादा सुख भोगती हैं? रानियाँ ज्यादा सुख भोगती हैं और राजायें बहुत खून-खराबा करते हैं। उतना सुख भोगने की उनको परवाह नहीं ह॥ लेकिन उनको स्वाभिमान की परवाह ह॥ इसीलिए मुरली में बोला ह॥ तीन मूर्तियों में एक ह॥ शेर, एक ह॥ बकरी और एक ह॥ घोड़ा। कौनसा पसंद ह॥

जिज्ञासु- शेर।

Baba: Do the queens of many births have the nature of remaining subordinates or of remaining free? They have the nature of remaining subordinates. What does the Father make us when He comes? The Father comes and makes us souls, free. They (such souls) are called the beads of the rosary of Rudra. They constitute the rosary of the Father; they have an independent nature. And those who are the followers of Vishnu, those who belong to the community of Vishnu have the *sanskara* of remaining subordinates. Whether it is in heaven or in hell, do the kings enjoy more happiness in their life or do the queens enjoy more happiness? The queens enjoy more happiness and the kings indulge in a lot of bloodshed. They do not care much about enjoying happiness. But they care about their self-respect. This is why it has been said in the Murlī: among the three personalities, one is a lion, one is a goat and one is a horse. Which one do you like?

Student: Lion.

बाबा- बकरी को तो चाहे जो कान से पकड़ ले, बस आधीन बनाके ले जाएगा। कसाई पकड़ लेगा तो आधीन बनाएगा। और कोई श्रेष्ठ पकड़ लेगा तो भी आधीन बनाके रखेगा। वो ह॥ही देवताई स्वभाव। और वो जो रुद्रमाला के मणके हैं वो देवताई स्वभाव के नहीं हैं। क्या? वो सद॥ देवता बनकरके रहने वाले नहीं हैं। पतितों की लिस्ट ह॥ या विष्णु के फॉलोवर्स, पावन बनकरके रहने वालों की लिस्ट ह॥ कौनसी लिस्ट ह॥ पतितों की लिस्ट ह॥

Baba: Whoever wants may catch the goat by its ear and take it under him. If a butcher catches it, he will make it his slave. And even if a righteous person catches it, he will make it his subordinate. They have a divine nature indeed. And the beads of Rudramala do not have a divine nature. What? They do not remain deities always. Is it a list of sinful ones or a list of the followers of Vishnu who remain pure? Which list is it? It is a list of sinful ones.

पतित पावन बाप किसको पसंद करता ह॥ जो सन्यासी बनकरके पवित्र रहते हैं उनको पसंद करता ह॥ या जन्म-जन्मांतर गृहस्थी में रहकरके पतित बन गए ह॥ उनको पसंद करता ह॥ गृहस्थियों को....। जिनमें पतितपना जास्ती आ गया ह॥ उनको पसंद करता ह॥ तो पवित्र रहना बड़ी बात नहीं ह॥ क्या बड़ी बात ह॥ बाप को पहचानना ही सबसे बड़ा गुण ह॥ क्या? बाप सबसे बड़ा गुण कौनसा देखते हैं? पवित्र आत्माओं को पहले उठाते हैं या बाप को पहचानने वालों को पहले उठाते हैं? तुम बच्चों में कोई गुण हो या ना हो बाप को परवाह नहीं ह॥ बाप कौनसा गुण देखते हैं? कि दुनियाँ में चाहे जितने अवगुणधारी हैं; लेकिन इन बच्चों में एक गुण विशेष ह॥ दुनियाँ के मुकाबले। क्या? बाप की पहचान। तो खुश होना चाहिए या दुखी होना चाहिए?...

जिज्ञासु- खुश होना चाहिए।

Who does the purifier of the sinful ones, the Father like? Does He love those who lead a pure life like *sanyasis* or does He like those who have become sinful while leading a household life for many births? The householders.....He likes those who have become more sinful. So, leading a pure life is not a big issue. What is the bigger issue? Recognizing the Father is the biggest virtue. What? Which greatest virtue does the Father observe? Does He uplift the pure souls first or does He first uplift those who recognize the Father? The Father does not care whether you children have any virtue or not. Which virtue does the Father see? Someone may be vicious to any extent in the world, but there is one special virtue in these children when

compared to the (people of the) world. What? Realization of the Father. So, should you feel happy or should you feel sorrowful?

Student: We should feel happy.

बाबा- ...कि अरे! वष्णव पंथी बनते तो सुख ज्यादा उठाते। अरे! दुनियाँ में सुख भोगना ही सबसे बड़ी बात हया स्वाभिमान सुरक्षित बना रहे वो सबसे बड़ी बात ह॥

जिज्ञासु- स्वाभिमान।

बाबा- स्वाभिमानी बनकर रहें। वो सबसे बड़ी बात ह॥

जिज्ञासु- वो भी अहंकार होता ह॥

बाबा- स्वाभिमान को अहंकार नहीं कहा जाता। अहं पदा होता ह॥ पांच तत्वों से और स्वाभिमान पदा होता ह॥.. स्व कहते हैं को आत्मा को। वो आत्मा का अभिमान ह॥ आत्मा परमपिता परमात्मा का बच्चा ह॥

Baba: (Should you feel unhappy thinking) that arey! We would have enjoyed more happiness had we been the followers of Vishnu. Arey! Is enjoying happiness the biggest achievement in the world or is maintaining our dignity (*swabhimaan*) the biggest achievement?

Student: Self respect.

Baba: We should maintain our dignity. That is the biggest issue.

Student: That is also a kind of ego, isn't it?

Baba: Self-respect is not called ego. Ego(*swabhiman*) arises from the five elements and the self respect arises from....*Swa* means soul. That is a respect (*abhimaan*) of the soul. A soul is the child of the Supreme Father Supreme soul.

समय-52.46-53.33

जिज्ञासु- बाबा, आत्मा में भक्तिमार्ग का संस्कार रहेगा, ये कैसे समझा जाएगा?

बाबा- कहेगा कुछ और और करेगा कुछ और। ये सबसे बड़ी पहचान ह॥ उसकी एक्ट से पता लग जाएगा। ये जानयुक्त एक्ट नहीं करेगा। कथनी और करनी में भक्तों में बहुत अंतर हो जाता ह॥ और जानी जो होगा जो सोचेगा सो बोलेगा और जो बोलेगा सो करके भी दिखाएगा।

Time: 52.46-53.33

Student: Baba, how can we understand that a soul has the *sanskars* of the path of *bhakti*?

Baba: He will say something and do something else. This is the biggest indication. We can know from his act. He will not act in accordance with the knowledge. There is a lot of difference between the words and the actions of the devotees. And the one who is knowledgeable will speak only what he thinks and whatever he speaks, he will also do it and show.

समय-53.38-55.15

जिज्ञासु- बाबा, त्रेता के अंत में अर्ध विनाश होता ह॥ सतयुग, त्रेतायुग में तो सब देवातयें पावन होते हैं। फिर अर्ध विनाश होके कैसे दुख भोगना पड़ता ह॥

बाबा- हाँ जी।

जिज्ञासु- क्यों दुख भोगना पड़ता ह॥ विनाश होने के बाद थोड़ा लोग तो मरेंगे ना।

बाबा- तराजू होता है। तराजू में कभी बलेंस बिगड़ता है। बलेंस कब बिगड़ जाता है। जब एक तरफ भारी हो जाता है और दूसरी तरफ हल्का हो जाता है। तो आत्मा की जो 16 कलायें हैं। त्रेता के अंत में जो भी आत्मायें हैं। उनका बलेंस बिगड़ जाता है या बलेंस में ही बनी रहती हैं? सबका बलेंस बिगड़ जाता है।

Time: 53.38-55.15

Student: Baba, semi-destruction takes place in the end of the Silver Age, doesn't it? In the Golden Age and Silver Age all are pure deities. Then why do they have to experience sorrows due to semi-destruction?

Baba: Yes.

Student: Why do they have to experience pain? At least some people will die after destruction, will they not?

Baba: Suppose there is a weighing scale (*taraaju*). Is the balance of a weighing scale ever disturbed? When is it disturbed? When one side becomes heavy and the other side becomes light. So, the 16 celestial degrees of a soul... Do all the souls in the end of the Silver Age experience imbalance or do they maintain balance? Everybody experiences imbalance.

जिज्ञासु- तो 16 से सभी 8 हो जाते हैं ना फिर थोड़े लोग तो होते हैं।

बाबा- तो बलेंस बिगड़ गया ना। बलेंस बिगड़ा तो नीचे की दुनियाँ में आ गए ज्यादा लोग।

जिज्ञासु- नीचे की दुनियाँ में आ गए।

बाबा- तो ऊपर से जो उतरेंगे वो और ही ज्यादा नीचे उतरेंगे कि श्रेष्ठ उतरेंगे? और ही ज्यादा नीचे उतरते हैं और उनकी संख्या बहुत, कई गुनी, कई गुनी होती है।

Student: So, everyone changes from 16 (celestial degrees) to 8 (celestial degrees), don't they? But some people do survive.

Baba: So, imbalance has occurred, hasn't it? When imbalance occurred, more people came to the world below (i.e. the corporeal world).

Student: They came to the world below.

Baba: So, will the souls that descend from above (i.e. the Supreme Abode) be much more degraded souls or righteous souls? Those who descend are much more degraded and their number is huge, many, many times more.

समय-55.24-1.07.50

जिज्ञासु- बाबा, सब बी.के.वाले कुमारिका दादी, विश्व किशोर भाऊ, जगदीश भाई, वो सब शरीर छोड़ने के बाद बीजरूप आत्माओं में प्रवेश करके, वो ए०वांस नालेज का वो बोल रहे हैं। वो कसे? शरीर छोड़ने के बाद तो सब भूलना है।

बाबा- जसो भक्तिमार्ग में। भक्तिमार्ग में जो गुरु बनकरके बड़े हुए हैं। गद्दीनशीन हैं वो मान-मर्तबा ले रहे हैं या नहीं? ले रहे हैं। और मान-मर्तबा लेते हुए भी ब्रह्माकुमार-कुमारियों के संग में जब आते हैं और उनकी बातें सुनते हैं। तो उनके अंदर से ये आता है कि हाँ ये सच्चे हैं? दुनियाँवी गुरुओं को, सन्यासियों को ये बुद्धि में आता है कि वास्तव में परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है।

मनुष्य आत्मा 84 लाख योनियों में नहीं जाती, अच्छी तरह बुद्धि में बँधता है। लेकिन अपने मान-मर्तबे को छोड़ नहीं सकते। क्यों नहीं छोड़ सकते? क्योंकि लोकलाज में बंध जाते हैं। उनका देहअभिमान जो मान-मर्तबे की दुनियाँ है वो छोड़ने नहीं देता। ये तो दुनियाँ वाले गुरुओं की बात हुई।

Time: 55.24-1.07.50

Student: Baba, BKs like Kumarka Dadi, Vishwa Kishore Bhau, Jagdishbhai, after leaving their bodies, they are entering seed-form souls and speaking about advance knowledge. How does it happen? After leaving their bodies they should forget everything.

Baba: For example, the path of bhakti. In the path of bhakti, those who are sitting as gurus..., those who are sitting on the thrones; are they getting respect and position or not? They are. And despite getting respect and position, when they come in the company of Brahmakumar-Kumaris and listen to them, do they feel in their mind or not, 'yes, these people are true'? It occurs in the intellect of the worldly gurus, the sanyasis that actually the Supreme Soul is not omnipresent [and] a human soul does not pass through 84 lakh species. It sits in their intellect properly. But they cannot leave their respect and position. Why can't they leave it? It is because they are bound by public honor. Their body consciousness does not allow them to leave their world of respect and position. This was about the worldly gurus.

अब दुनियाँ में जो गुरु हैं उनका जो स्वभाव संस्कार है वो ब्राह्मणों की दुनियाँ में जो बेसिक नालेज के गुरु हैं मान-मर्तबा लेने वाले हैं, लोक लाज में बंधे हुए हैं। वो बुद्धिमान हैं या बुद्धि हैं? सच्चाई को पहचानने वाले हैं या जानबूझकरके सच्चाई को छुपाने वाले हैं? जानबूझकरके छुपाने वाले हैं। उनको बोला है रावण कौन? जरूर कहेंगे ये गुरु लोग। जो गदियों पर बैठे हुए हैं। मान-मर्तबा भोग रहे हैं। ये गुरु लोग, जहाँ रावण के लिए गायन है शास्त्रों में, अंदर से जानता था-भगवान कौन है। जानता था या नहीं? जानता था। फिर भी देहअहंकार के कारण स्वीकार नहीं करता था कि ये भगवान है। क्या अहंकार था? कंस को क्या अहंकार था? उसको अहंकार था अगर भगवान है तो हमसे टक्कर ले। हमारे मान-मर्तबा को नीचे झुकाकर दिखाए। हमारे पास जो धन सम्पत्ति है उस धन सम्पत्ति, मान-मर्तबा और वैभव के मुकाबले ये क्या है कुछ भी नहीं है तो उसका अहंकार चढ़ गया। जब शरीर छूट जाता है तो न धन रह जाता है न मान-मर्तबा रह जाता है न मर्तबा रह जाता है।

[Like] the nature and sanskars of the worldly gurus, the gurus of the basic knowledge in the world of Brahmins, who get respect and position, who are bound in public honour; are they intelligent or fools? Do they recognize truth or do they willfully hide the truth? They willfully hide the truth. As regards them it has been said: who is Ravan? It will definitely be said, these gurus, who are sitting on thrones and are enjoying respect and position. These gurus; just as it is famous about Ravan in the scriptures that he knew in his mind who is God. Did he know or not? He knew. Still, out of body consciousness, he used to not accept that this person is God. What ego did he have? What ego did Kansa have? He had an ego that if this one is God, he should confront me; he should be able to decrease my respect and position. The wealth and property that I have; when compared to that wealth and property, that respect and position and grandeur, what is this (person)? Nothing. So, he became egotistic. When someone leaves the body, neither his wealth remains with him, nor respect and position.

जिज्ञासु- फिर भी संस्कार तो रहता ह॥ना बाबा।

बाबा- अंदर से वो आत्मा समझती तो ह॥ वो लोक लाज के बंधन में बंधकर रहती ह॥या उससे मुक्त हो जाती ह॥ लोक लाज के बंधन से मुक्त हो जाती ह॥ और जो लोकलाज के बंधन से जो आत्मा मुक्त हो गई। तो ज्यादा सेवा करेगी, ईश्वरीय सेवा ज्यादा करेगी या कम करेगी? ज्यादा सेवा करेगी। और जब उसकी बुद्धि में प्रवेश करने के बाद ए॥वांस नालेज पक्की बछ जावेगी। तो और ज्यादा सेवा करेगी। जब तक पूरी नालेज नहीं बछती ह॥ तो थोड़ा बहुत आपोजीशन भी कर सकता ह॥ ज॥ अभी आत्मायें प्रवेश करती हैं ए॥वांस वालों में। तो कब तक आपोजीशन करेगी? जब तक पूरी बात उनकी बुद्धि में नहीं बछी ह॥ और जब पूरी बात बछ जाती ह॥तो आपोजीशन के बजाए सपोर्ट करेगी। अंत में ऐसा ही होने वाला ह॥ दुनियाँ में सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं की संख्या बढ़ेगी या घटेगी? दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ती जाएगी। क्योंकि अकाले मौत लगातार बढ़ रही ह॥ या घट रही ह॥ अकाले मौत बढ़ती चली जावेगी। लगातार भूकंम होंगे तो बड़े-बड़े मकान, बड़े-बड़े बिल्डिंग, मल्टी स्टोरीस॥सारी गिरेंगी। तो अकाले मौत बढ़ेगी। वो आत्मायें कहाँ जायेंगी? उनका उद्धार कहाँ से होगा?

जिज्ञासु- बीजरूप आत्माओं से।

Student: Still the sanskars remain, don't they, Baba?

Baba: That soul feels from within. Does it remain bound by the bondage of public honour or does it become free from it? It becomes free from the bondage of public honour. And if a soul becomes free from the bondage of public honour, will it do more service, more service of God or less? It will do more service. And when the advance knowledge enters in its intellect and sits firmly, it will do even more service. As long as the complete knowledge does not sit (in the intellect) it can indulge in opposition to some extent or the other. For example, souls enter those who follow the advance knowledge now. So, how long will they oppose? [They will oppose] as long as the complete issue has not sat in their intellect. And when the issue fits completely, then instead of opposition, it will support. It will happen like this in the end. Will the subtle bodied souls increase in the world or will they decrease? They will increase day and night because... is untimely death increasing or decreasing continuously? Untimely death will increase. When earthquakes will occur continuously all the big houses, big buildings, multistoried buildings will crash. So, untimely death will increase. Where will those souls go? How will they be uplifted?

बाबा- यही बीजरूप आत्मायें हैं। जिनके द्वारा उनका उद्धार होना ह॥ इसीलिए एक-एक में अनेक-अनेक प्रवेश करेंगी। परंतु जो आत्मिक स्थिति के पक्के होंगे वो उनके प्रभाव में आने वाले नहीं हैं। क्योंकि उनके ऊपर ईश्वरीय ज्ञान का पूरा प्रभाव चढ़ा हुआ ह॥ तो उनकी प्रजा भी बनने वाले नहीं हैं। जो आत्मिक स्थिति में कच्चे होंगे। उनके ऊपर उन आत्माओं का प्रभाव हो जावेगा, सवारी कर लेंगे। और सवारी करके तब तक जब तक वो सच्चाई को पूरा नहीं समझती हैं, ए॥वांस के ज्ञान की गहराई को पूरा नहीं समझती हैं तब तक विरोध करती रहेंगी। बाद में सहयोगी बन जावेंगी।

Baba: These are the very seed-form souls through whom they are going to be uplifted. This is why many (souls) will enter each one. But those who are firm in soul conscious stage will not be influenced by them because they are completely influenced by the knowledge of God. So, they are not going to become their subjects either. Those who are weak in soul conscious stage will be influenced by those souls, they will enter them. And after entering them, they will continue to oppose until they understand the truth, until they completely understand the depth of the advance knowledge. Later on they will become helpful.

जिज्ञासु- जो आत्मिक स्थिति का पक्का हो जाएगा। उनमें प्रवेश नहीं करेंगी वो आत्मार्ये?

बाबा- जो आत्मिक स्थिति का पक्का होगा, बीजरूप स्टेज में होगा उसमें सूक्ष्म शरीर को प्रवेश करने का रास्ता मिलेगा? बिंदु रूपी स्टेज, कारण स्टेज। एक ह॥ झाड़ उसको कहते हैं बड़ा विस्तार। एक होता ह॥ जड़ उतना विस्तार नहीं ह॥ लेकिन सारे वृक्ष का आधार ह॥ और एक उन जड़ों का भी बीज। ज्यादा पावरफुल कौन ह॥ बीज ज्यादा पावरफुल ह॥ तो जो आत्मिक स्थिति जिनकी पक्की हो चुकी ह॥ इतनी पक्की हो चकी ह॥ कि एक सेकण॥ में निराकारी स्टेज जब चाहें तब, एक सेकण॥ में मनन-चिंतन-मंथन की स्टेज जब चाहें तब और एक सेकण॥ में साकारी स्टेज जब चाहें तब और जितनी देर चाहें तब तक साकार इन्द्रियों से सुख भोगने वाले। फिर जल्दी ही आक्रमण हो साकार से क्या बन जायें? एकदम निराकारी स्टेज धारण कर लें।

Student: Will those souls not enter those who become firm in soul conscious stage?

Baba: Will the subtle body get a path to enter the one who is firm in soul conscious stage, the one who is in a seed-form stage, the seed-form stage, the causal stage? One is a tree; it is called vast expanse. One is the roots; they are not very extensive. But they are the base of the entire tree. And one is the seed of even the roots. Who is more powerful? The seed is more powerful. So, those who have become firm in soul conscious stage, those who have become so firm that they can become constant in an incorporeal stage whenever they wish, in a second, they can attain the stage of thinking and churning whenever they wish, in a second, and they can attain the corporeal stage in a second. Whenever they wish and however long they wish they can enjoy the pleasure of the corporeal organs. And as soon as the attack takes place what should they change from a corporeal stage? They should attain the incorporeal stage immediately.

तो ऐसी आत्मार्ये जो पर्फेक्ट प्रैक्टिस वाली होंगी। अभी-2 साकारी अभी-2 निराकारी अभी-2 आकारी। बापदादा ने कौनसी प्रैक्टिस करने के लिए बोला? यही तो प्रैक्टिस करने के लिए बोला अव्यक्त बनो। शुरूवात में तो बहुत ही बोलते थे अव्यक्त बनो। आकारी बनेंगे तो भी अव्यक्त हैं और निराकारी बनेंगे तो भी अव्यक्त हैं। व्यक्त भाव से परे, जो स्टेज इन आँखों से नहीं देखी जाती ह॥..

So, such souls which have perfect practice, corporeal in a moment and incorporeal in the next moment and subtle in the next one. Which practice has Bapdada asked us to do? We have been asked practice just this; to become *avyakt*. In the beginning He used to frequently ask us to become *avyakt*. Even if we become subtle we are *avyakt* and even if we become incorporeal we are *avyakt*, a stage beyond the corporeal feeling, a stage which is not visible through these eyes.

तो ऐसी स्टेज वाली आत्माओं को वो भूत-प्रेतानी आत्मायें पिस्टर्ब ही नहीं कर सकेंगी। नहीं तो ऐसे भी होगा कि प्राण भी हरण करके ले जावेंगे। फिर भले बाद में उनको पता चलेगा कि अरे जिनके साथ हमने ऐसा दुष्कर्म कर लिया कि इनको आप समान सूक्ष्म शरीरधारी बना तो लिया; लेकिन ये तो बीज हैं ये सदाकाल सूक्ष्म शरीरधारी बनकर नहीं रह सकता। ये तो हमारा भी बाप ह॥ वो बीजरूप आत्मा सूक्ष्म शरीर धारण करने के बाद उसके ऊपर काबिज हो जावेगी। क्योंकि बीजरूप आत्मा ह॥

So, those ghostly and devilish souls cannot even disturb the souls in such a stage. Otherwise, they can even make us leave the body. Then, later on they may realize, 'arey, the person against whom we committed such a sin and made him a subtle bodied soul like me, but this one is a seed; he cannot remain subtle-bodied forever. He is (like) my father (superior to me)'. After attaining a subtle body, that seed-form soul will become dominant over it because it is a seed-form soul.

उसने जो ज्ञान लिया ह॥ वो कौनसा ज्ञान लिया ह॥ ऐसा ए॥वांस ज्ञान लिया ह॥ जो इसी जन्म में पढ़ाई की पूरी प्रारब्ध देना सिखाता ह॥ इसी जन्म में नर से नारायण बनने का ज्ञान लिया ह॥ और उन आत्माओं ने अगले जन्म में, कई जन्म में, अगले जन्म में। तो पढ़ाई की गति....। एक तो वो आत्मायें जो सूक्ष्म शरीरधारी हैं आलसपूर्ण। और दूसरी वो आत्मायें जो बीजरूप स्टेज वाली हैं। भले थोड़े समय के लिए बीजरूप स्टेज उनकी चली जाएगी क्योंकि अकाले मौत हुई ह॥ लेकिन ज्यादा पावरफुल बन जाती हैं। तो उनके ऊपर जल्दी विजय पाय लेंगी और फिर दुबारा जन्म लेकरके तीव्र पुरुषार्थ करेंगी। क्योंकि मुरली में महावाक्य आया ह॥ मेरे मुख से दो अक्षर भी सुना तो स्वर्ग में क्यों नहीं आवेगा। मेरे मुख से दो अक्षर भी सुना? कौनसे स्वर्ग में आ जावेगा? नम्बरवार स्वर्ग में आवेगा या अव्वल नम्बर स्वर्ग में आवेगा?

जिज्ञासु- अव्वल नम्बर स्वर्ग में।

Which knowledge has he taken? He has taken the advance knowledge that teaches us to achieve complete fruits of the knowledge in this birth itself. He has obtained knowledge of changing from a man to Narayan in this birth itself. And those souls have (obtained the knowledge to obtain fruits) in the next birth, in many births, in the next birth. So, the result of the knowledge....One kind is the souls who have already taken the subtle body. And the second kind is the souls which have the seed-form stage. Although they lose their seed-form stage for some time since they have met an untimely death, they become more powerful. So, they will gain victory over them soon and then take rebirth and make fast spiritual efforts because the *mahavakya* (great sentence) has been mentioned in the Murli, 'Even if someone has heard two words from my mouth, why will he not come to heaven?' Even if he has heard two words from my mouth? To which heaven will he come? Will he come to the number wise heaven or in the number one heaven?

Student: To the number one heaven.

बाबा- बाप ने कौनसे कौन स्वर्ग में आने का वरदान दिया? अटवल नम्बर स्वर्ग में आ जावेगा। मेरे मुख से ऽायरेक्ट सुना तो। शरीर रहते-2। तो सूक्ष्म शरीरधारी जो ओरिजनल आत्मायें हैं वो तो शरीर रहते-2 मेरे मुख से ऽायरेक्ट सुन ही नहीं पाती। वो तो फिर भी भले सूक्ष्म शरीर बहुत पावरफुल होता ह॥ फिर भी बीजरूप आत्मा के सूक्ष्म शरीर के मुकाबले बहुत कमजोर हो जाता ह॥

Baba: The Father has given us the boon to come in which heaven? 'He will come to the number one heaven if he has heard directly from my mouth while living in the body'. So, the original subtle bodied souls are not at all able to listen directly from my mouth while being alive. Although the subtle body is very powerful, they are very weak when compared to [the subtle bodied] seed-form soul.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.